प्रकाशित: 21 फरवरी 2019 को ईचर्चा.इन पर प्रकाशित-

ये 'पांच' कारण कराएंगे भाजपा की सत्ता में वापसी

शिवानन्द द्विवेदी

सतरहवीं लोकसभा के लिए आसन्न चुनावों में अब गिनती के साठ दिन ही बचे हैं। क्या भाजपा और नरेंद्र मोदी वापस सत्ता में उसी हनक के साथ आ रहे हैं, यह सवाल सभी के जेहन में चल रहा है। ऊपर उठते सियासी तापमान के बीच मोदी को रोकने की कोशिशें भी भाजपा विरोधी दलों द्वारा की जा रही हैं।

'महागठबंधन' के बहाने यह दिखाने की कोशिश भी हो रही है कि मोदी को रोकने के लिए विपक्ष एकजुट है। हालांकि इस कथित एकजुटता का कोई स्थाई एवं स्पष्ट स्वरूप अभी तक सामने नहीं आ सका है। खैर इन तमाम कवायदों के बीच पांच ऐसे कारण हैं जो मोदी को दोबारा मजबूती से प्रधानमंत्री बनाते नजर आ रहे हैं। ये वो पांच कारण हैं, जो भाजपा की सत्ता में पुन: वापसी की वजह बनेंगे।

मोदी का करिश्माई चेहरा

लोकसभा चुनाव 2019 को लेकर जब भी 'चेहरे' और 'नेतृत्व' का सवाल पूछा जाता है तब मोदी सबको मात देते नजर आते हैं। यह सच है कि प्रधानमंत्री के रूप में देश की पहली पसंद मोदी हैं। लोकप्रियता के पैमाने पर नरेंद्र मोदी किसी भी नेता से बहुत आगे हैं। 'फेस मोदी' फिलवक्त देश में किसी भी नेता से अधिक भरोसेमंद है। मोदी के बरअक्स उनके आसपास भी किसी और चेहरे का नहीं होना भाजपा की सत्ता में वापसी का बड़ा कारण बन सकता है। देश का मिजाज और तमाम चैनलों के सर्वे भी यह बताते हैं कि देश में सबसे अधिक लोग नरेंद्र मोदी को अपना प्रधानमंत्री देखना चाहते हैं। वहीं दूसरी तरफ विपक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी 'चेहरा' और 'नेतृत्व' है। जो विपक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी है, भाजपा की वही सबसे बड़ी मजबूती है। इसका फायदा भाजपा को मिलेगा।

मजबूत संगठन से राह होगी आसान

मोदी के नेतृत्व और उनके करिश्माई चेहरे की बदौलत 2014 में देश का एक बड़ा मतदाता वर्ग भाजपा के साथ जुड़ा था। यही कारण था कि भाजपा के वोट फीसद में इतिहास का सर्वश्रेष्ठ इजाफा हुआ। मोदी के नेतृत्व और विश्वसनीयता के प्रति जुड़े मतदाताओं को भाजपा से जोड़ने तथा संवाद करने का यह बड़ा अवसर था। 2014 में राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद अमित शाह ने वही किया। भाजपा की सदस्यता में विस्तार हुआ, हर वर्ग, हर समुदाय एवं हर क्षेत्र में नए सदस्य बनाए गए। उनसे संपर्क की नियमित व्यवस्था शाह ने की। कहना गलत नहीं होगा कि अमित शाह ने उस '**मोदी वोट बैंक**' को संगठन के माध्यम से जोड़ने, उनसे संवाद करने, उनको भाजपा की सदस्यता दिलाने तथा हर वर्ग तक पार्टी की पहुंच को सूक्ष्म रणनीति से ले जाने का कार्य किया। लोकसभा चुनाव 2014 के बाद हुए विधानसभाओं के चुनाव में भाजपा के मत प्रतिशत में हुए इजाफे इसके सबसे बड़े प्रमाण हैं। एक तरफ नरेंद्र मोदी सरकार के मोर्चे पर जन कल्याण की योजनाओं तथा पारदर्शी नीतियों को अमल में ला रहे थे, वहीं दूसरी तरफ संगठन के मोर्चे पर मोदी के सारथी अमित शाह इस वर्ग को भाजपा के संगठन की संवाद प्रणाली से जोड़ने में लगे रहे। इस दौरान नई बूथ समितियां बनाई गईं, संगठन स्तर पर संपर्क और संवाद के माइक्रो केंद्र बनाए गए और मतदाताओं और लाभार्थियों तक पहुंचने के नए कार्यक्रम तय किए गए।

एक आंकड़े के मुताबिक, इन पांच वर्षों में संगठन के स्तर पर भाजपा की बड़ी सफलता यह है कि उसने 2014 में मिले अपने कुल मतों के 65 फीसद लोगों को पार्टी का सदस्य बनाया है। भाजपा के पास वर्तमान में लगभग 11 करोड़ सदस्य बताए जाते हैं। कहीं न कहीं संगठन और सरकार के बीच समन्वय के साथ पांच वर्षों में भाजपा ने अपनी जमीन को और मजबूत कर लिया है, जो किसी भी दल ने अभी तक नहीं किया है।

नए मतदाताओं के बीच बनी पैठ

नरेंद्र मोदी ने 'गरीब कल्याण' की योजनाओं के माध्यम से अपने कार्यकाल में एक नया मतदाता वर्ग तैयार किया। जनधन, उज्ज्वला, सौभाग्य, आवास, शौचालय, पेंशन, बीमा, आयुष्मान तथा कृषि से जुड़ी योजनाओं के माध्यम से मोदी ने देश के गरीब तबके तक अपनी विश्वसनीयता को मजबूत किया है। 2014 में मोदी को 17 करोड़ 16

लाख 57 हजार के आसपास वोट मिले थे। इसबार अलग-अलग योजनाओं के माध्यम से नरेंद्र मोदी ने लगभग 30 करोड़ लोगों तक पहुंच बनाई है।

इन 30 करोड़ लोगों में बड़ी संख्या उस वर्ग की है, जिसे पारंपरिक तौर पर भाजपा का मतदाता नहीं माना जाता रहा है। लेकिन 2014 के बाद स्थिति बदल गई है। भाजपा ने नरेंद्र मोदी की नीतियों, उनकी योजनाओं तथा उनकी छवि की बदौलत इस तबके के बीच अपना मजबूत वोट बैंक बनाने में कामयाबी हासिल की है। इस नए वोट बैंक ने देश में जातिवाद और तुष्टीकरण की राजनीति को काफी नुकसान पहुंचाया है। क्षेत्रीय दलों का आकार सिमटा है। वर्ष 2017 में हुए उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा को 40 फीसद वोट मिले थे, जो पिछले 2012 के विधानसभा चुनाव की तुलना में 25 फीसद ज्यादा है। 2017 में भाजपा को उत्तर प्रदेश में मिले वोट तकरीबन उसी के आसपास हैं, जितने 2014 के लोकसभा में थे। 2014 में जब भाजपा को यूपी से 71 सीटें मिली थीं, तब लोगों ने कहा कि मोदी लहर की वजह से हुआ है, जो अब दोबारा नहीं हो सकता। लेकिन जब 2017 के विधानसभा चुनावों के परिणाम आए तो ऐसे आकलन गलत साबित हुए। इसके पीछे बड़ा कारण यह था कि मोदी के नाम पर जुड़े मतदाताओं के बीच 'फेस मोदी' का भरोसा और बढ़ता ही गया, जिसने भाजपा को जमीनी मजबूती दी।

दरअसल जब नई सरकार आती है तो वह नई आशाओं के गर्भ से जन्म लेती है। मोदी सरकार का 2014 में आना भी कुछ ऐसा ही था। आज पांच साल बाद मोदी ने आशाओं के उस उबाल को अपनी कार्यप्रणाली से सहलाया भी है और उम्मीदों को बढ़ाया भी। आज मोदी की तरफ लोग निराशा से नहीं बल्कि उम्मीदों से देखते हैं, भरोसे से देखते हैं। यह मोदी की सफलता है कि भरोसे को बरकरार रख पाए हैं। ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि देश में अनेक ऐसे अवसर आए जब सरकार पर सवाल उठे, मसलन ईंधन कीमतों में बढ़ोतरी का एक दौर आया, विमुद्रीकरण के फैसले से कुछ महीने की परेशानियां आईं, हाल में आतंकी हमला हुआ, लेकिन फिर भी देश में निराशा की बजाय इस उम्मीद की चर्चा बनी कि मोदी कुछ करेंगे। इसके पीछे कारण यह है कि जब-जब ऐसे अवसर आए, मोदी ने जनता को निराश नहीं किया बल्कि उनकी उम्मीदों की नब्ज को समझते हुए समाधान भी दिया। नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता के पीछे यह बड़ी वजह है जो उन्हें करिश्माई नेता के रूप आज भी कायम रखे हुए है।

विपक्ष का बिखराव और नेतृत्वविहीनता

मोदी के खिलाफ जिस सबसे बड़ी चुनौती की बात राजनीतिक विश्लेषक कर रहे हैं, वह 'महागठबंधन' है। लेकिन अब जब चुनाव में साठ दिन शेष हैं तो यह देखना अहम है कि वह उस 'महागठबंधन' का अस्तित्व भी है अथवा वह सिर्फ कल्पनाओं की बुनियाद पर खड़ी एक किवदंती मात्र है। फिलहाल की स्थिति में 'महागठबंधन' का कोई स्वरूप नजर नहीं आ रहा। मंचों पर गठजोड़ की प्रतीकात्मक लफ्फाजियों को छोड़ कोई भी फार्मूला सामने नहीं आया जिसके आधार पर माना जाए कि मोदी के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर पर कोई 'एका' आकार ले रहा है। बंगाल में भले ही सब एक मंच पर आए हों लेकिन जमीन पर लड़ाई चतुष्कोणीय दिख रही है। यूपी में भी गठबंधन के बावजूद त्रिकोणीय लड़ाई के आसार नजर आ रहे हैं। बिहार में राजग में सीट बंटवारा हो चुका है तो वहीं राजद-कांग्रेस-हम-रालोसपा के बीच कोई आम सहमति बनती नहीं दिख रही। महाराष्ट्र में राजग अपनी स्थिति स्पष्ट कर चुका है लेकिन कांग्रेस सहित भाजपा विरोधी दलों का कोई स्पष्ट फार्मूला नहीं नजर आ रहा। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय स्तर पर 'महागठबंधन' जैसी कोई एकजुटता दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही। नेतृत्व के सवाल पर तो इस कल्पनाओं के गठबंधन के नेता 'बगलें' झांकते नजर आते हैं। यह भाजपा के लिए अच्छा संकेत है कि जब विपक्ष बिखराव और अस्थिरता के मुहाने पर खड़ा होकर केवल कथनों में 'गठबंधन' की राग अलाप रहा है, तब भारतीय जनता पार्टी के सभी घटक दल एक सुर में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ने को तैयार दिख रहे हैं। जब मोदी सत्ता में आए थे तब उनके साथ लगभग 24 दलों का साथ था। आज यह संख्या 30 के ऊपर है। 2014 के चुनाव के बाद भाजपा को कई नए साथी मिले।

आज की स्थिति में यदि चंद्रबाबू नायडू की तेदेपा को छोड़ दें तो भाजपा खेमे से कोई बहुत महत्वपूर्ण साथी अलग नहीं हुआ है। बिहार में जदयू वापस राजग का हिस्सा बनी तो राजग से अलग होकर गए उपेंद्र कुशवाहा और जीतनराम मांझी भी गठबंधन की रार में फंसे हुए हैं। वहीं दक्षिण के तामिलनाडु में अन्नाद्रमुक के रूप में भाजपा को एक नया साथी मिला है। चूंकि तामिलनाडु का चुनाव इसबार इस नाते अलग होने की संभावना है क्योंकि द्रमुक और अन्नाद्रमुक दोनों के शीर्ष नेता अब नहीं रहे, लिहाजा दूसरी पीढ़ी के हाथों में कमान आने के बाद नई संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है।

गठबंधन के मोर्चे पर एकतरफ भाजपा नीत राजग लगभग अपना स्वरूप स्पष्ट कर चुका है वहीं दूसरी तरफ भाजपा विरोधी गठबंधन की सुगबुगाहटें कई फाड़ बंटी नजर आ रही हैं। इसका फायदा भाजपा को मिल सकता है।

दागमुक्त कार्यकाल पर जनता का भरोसा

नरेंद्र मोदी के पांच साल के शासन की एक बड़ी बात यह रही है कि उनके खुद के ऊपर तथा उनकी सरकार के ऊपर प्रामाणिकता के साथ कोई भी दाग नहीं लग सका है। यह इन चुनावों में भाजपा की वापसी के लिहाज से बड़ी वजह बनेगा, क्योंकि 2014 में नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार और शासन में अनियमितताओं का मुद्दा उठाकर सत्ता में आए थे।

आज पांच साल बाद जब दोबारा वे चुनावों में जा रहे हैं तो विपक्ष के पास कोई भी ऐसा भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है जो जनता के बीच भरोसे के साथ मोदी सरकार पर चस्पां कर सकें। राहुल गांधी भले ही राफेल का मुद्दा उठाते रहे हों लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के फैसले और कैग की रिपोर्ट के बाद राहुल गांधी की बातें जनता की समझ में नहीं आने वालीं।

इन पांच वजहों से साफ़ पता चलता है कि इसबार के लोकसभा चुनावों में मोदी का पलड़ा सभी पर एकबार फिर भारी नजर आ रहा है। संगठन, सरकार, लचर विपक्ष और विश्वसनीयता के भरोसे एकबार फिर नरेंद्र मोदी 7 लोक कल्याण मार्ग जाते दिख रहे हैं।